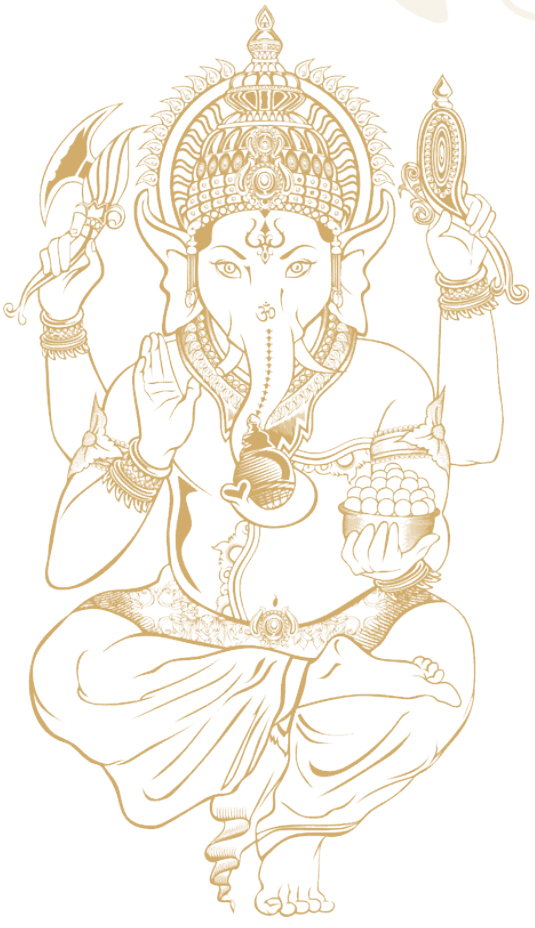

Shivansh

15 Jan 2026

09:57 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120936401**

तिथि 15/01/2026 **समय** 09:57:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:21
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	17:14:26 घं
वेलान्तर	00:09:20 घं
सूर्योदय	07:15:17 घं
सूर्यास्त	17:46:04 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	12
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	वृद्धि
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	या-यतीन्द्र
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	सूर्य
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 12वर्ष 7मा 19दि

बुध

15/01/2026
04/09/2038

	00/00/0000
	15/01/2026
शुक्र	29/11/2027
सूर्य	04/10/2028
चन्द्र	05/03/2030
मंगल	03/03/2031
राहु	19/09/2033
गुरु	26/12/2035
शनि	04/09/2038

योगिनी

भद्रिका 3वर्ष 8मा 18दि

भद्रिका

15/01/2026
03/10/2029

	15/01/2026
उल्का	14/04/2026
सिद्धा	04/04/2027
संकटा	14/05/2028
मंगला	04/07/2028
पिंगला	13/10/2028
धान्या	14/03/2029
भ्रामरी	03/10/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:37:54	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	---	0:00			
सूर्य			00:47:58	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	राहु	शत्रु राशि	1.34	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			20:05:23	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	नीच राशि	1.28	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	29:24:06	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	राहु	मित्र राशि	1.16	आत्मा	भ्रातृ	क्षेम
बुध		अ	26:42:32	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	सूर्य	सम राशि	1.19	अमात्य	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		25:14:11	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.22	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र		अ	02:49:45	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	गुरु	मित्र राशि	1.01	ज्ञाति	कलत्र	क्षेम
शनि			02:55:13	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.84	पुत्र	आयु	मित्र
राहु	व		15:46:36	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		15:46:36	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

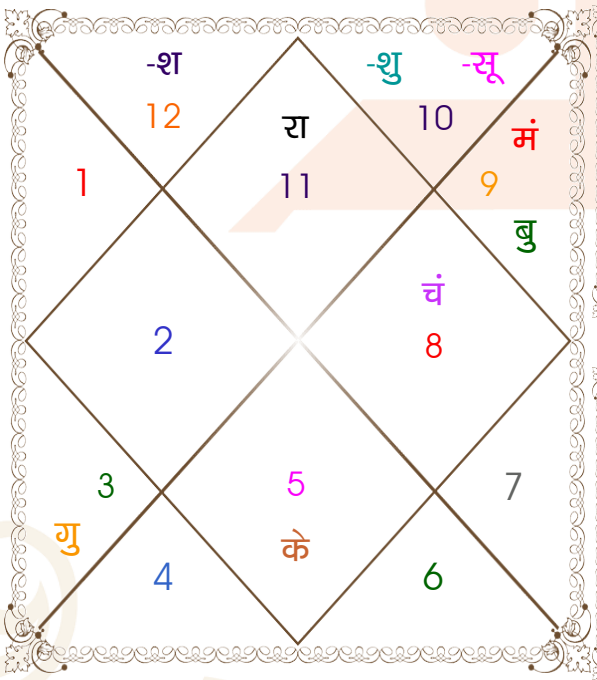

चन्द्र कुंडली

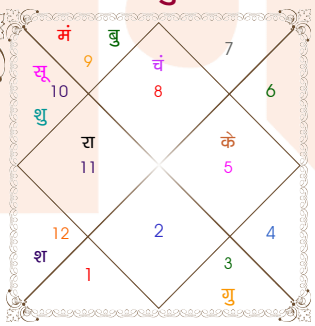

नवमांश कुंडली

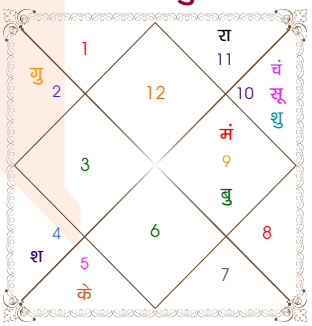

सर्वाष्टकवर्ग

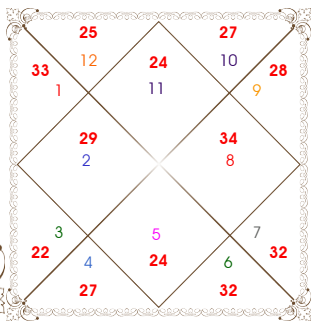

दशमांश कुंडली

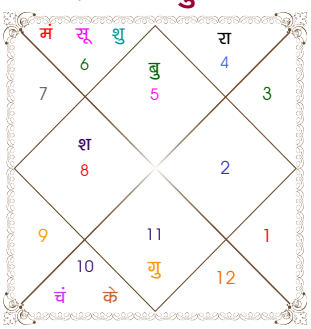

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण विप्र, योनि मृग, नाड़ी आद्य, वर्ग मृग तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "य" या "या" से प्रारम्भ होगा यथा- यशपाल, यशवन्त, यदुनन्दन आदि।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने से जातक के छोटे भाई को कष्ट होता है। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शान्ति करा लेनी चाहिए जिससे अरिष्ट का प्रभाव समाप्त हो सके। इसके लिए इस नक्षत्र के 28000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का विधि पूर्वक हवन कराना चाहिए। इस प्रकार जप एवं हवन करने से इसका अरिष्ट प्रभाव हीन हो जाएगा तथा अरिष्ट वाला जातक सुखी रहेगा।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपकी समाज में चारों ओर प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आप शारीरिक रूप से अत्यन्त ही सुन्दर पुरूष रहेंगे। इसमें कान्ति तथा लावण्यता का सुन्दर समावेश रहेगा। विविध प्रकार के धनैश्वर्य से आप सुसम्पन्न होकर एक सामर्थ्यशाली पुरूष होंगे तथा कठिन से कठिन कार्य करने में सक्षम रहेंगे। आपका समाज में पूर्ण रूपेण प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा सभी वर्गो में आपकी प्रतिष्ठा तथा प्रभाव रहेगा एवं लोग आपको श्रेष्ठ समझेंगे। आप भाषण देने की कला में अत्यन्त ही निपुण रहेंगे तथा चतुराई पूर्ण भाषण से श्रोताओं को प्रभावित करके नेतृत्व को प्राप्त करेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

कभी कभी आप अपनी क्रोधी प्रवृति का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको आर्थिक तथा सम्मान की हानि होगी। आप समाज में अन्य जनों के प्रति भी मन में आसक्ति रखेंगे तथा उनसे प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिकता से परिपूर्ण रहेगी तथा नित्य

धर्मानुपालन में भी यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक कोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके मित्रों की संख्या प्रचुर मात्रा में रहेगी तथा इनके मध्य आप मुख्य रूप से लोकप्रिय रहेंगे। आप सन्तोषी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा जितनी भी उपलब्धि हो उसी पर सन्तोष करेंगे। अनावश्यक चंचलता आपके मन में नही रहेगी परन्तु धर्माचरण में तत्पर रहते हुए भी आप अपने क्रोध को नियंत्रण करने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आप नैसर्गिक रूप से लेखन कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे फलतः काव्य लेखन में आप सफलता अर्जित करेंगे। आप स्वभाव से ही सहनशील होंगे तथा सुख दुःख को समान रूप से सहन करने में सफल रहेंगे। आपकी चालाकी तथा चतुरता उल्लेखनीय रहेगी तथा इसी चतुराई से आप अपने अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों के आप अत्यन्त ही श्रद्धालु पुरूष होंगे तथा ये आपको पूजनीय समझकर आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में

आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपका सीना विस्तृत तथा आखे बड़ी बड़ी एवं सुन्दरता से परिपूर्ण रहेंगी। साथ ही शरीर अल्प रूप से श्यामलता को प्राप्त रहेगा। आपके हाथ या पैरों में मत्यस्य चिन्ह भी अंकित होगा तथा हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की होंगी। गुरूजनों तथा माता पिता से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगे। अपनी बुद्धि चातुर्य से आप राज्य या सरकार के किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में सक्षम रहेंगे। आपके क्रूरकर्मो की ओर प्रवृति रहेगी फलतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में आपका कार्य क्षेत्र रहेगा। क्रूर कर्मों को आप गुप्त रूप से सम्पन्न करेंगे या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इनमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर एवं मस्तक भी विस्तृत रहेगा। अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव उत्पन्न होगा। आपका शरीर लावण्यता तथा कोमलता से भी युक्त रहेगा। आप एक नास्तिक प्रायः व्यक्ति होंगे तथा धर्म एवं ईश्वर के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी। आपकी दाढी तथा नाखून भी चोट के निशान से युक्त होंगे। धनैश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप हमेशा कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे तथा चतुराई से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। बन्धुवर्ग से आपको सहायता मिलती रहेगी। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज के सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अन्य सामाजिक जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण संबंध रहेंगे। आपके स्वभाव में क्रोध के भाव की भी प्रबलता रहेगी। इसके अतिरिक्त आप यदा कदा सरकार से आर्थिक हानि भी प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा बहुत से लोगों के आप पालन पोषण करने में पूर्णरूपेण समर्थ रहेंगे। स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली व्यक्ति रहेंगे तथा

इनसे पूर्ण सहयोग मान सम्मान एवं धनार्जन करने में पूर्ण सफल रहेंगे। आप राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। आपके मन में दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा हमेशा रहेगी तथा आजीवन इसके लिए आप प्रयत्नशील भी रहेगे। आप एक दृढ़बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यकलापों को दृढता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप साहस से भी सदैव सुसम्पन्न रहेंगे एवं निर्भीकता से अपने कर्म करते रहेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने में भी प्रवृत होंगे परन्तु इसमें आपकी धन हानि ही होगी। झगड़ा तथा विवाद आदि कार्यों को करने में भी अग्रणी रहेंगे। आप हृदय से कमजोर परिलक्षित होंगे। तथा जीवन में शान्ति का आभास करने में भी आप असमर्थ रहेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बाल्यकाल से ही आप घर से बाहर निवास करेंगे। स्वभाव में अभिमानी प्रवृति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी तथा समय समय पर इसका अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करते रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति भी आपके मन में सद्भावना व्याप्त रहेगी एवं उनसे कोई स्नेह रखेंगे। आप अपने जीवन में साहस पूर्वक धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप भ्रमण प्रिय भी रहेंगे तथा इधर उधर यात्राओं में अपना काफी समय व्यतीत करेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ की बाते बोलने वाले होंगे। आपका मन में दया एवं करूणा के भाव की अल्पता रहेगी। परन्तु आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा साहस से ही अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। अकारण ही या छोटी छोटी बातों पर आप शीघ्र ही क्रोधित भी यदा कदा हो जाया करेंगे। साथ ही अन्य जनों से आपके परस्पर विवाद चलते रहेंगे। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। अतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा परन्तु अन्य लोगों से आपका वैमनस्य का भाव रहेगा। अतः सामाजिक जनों से आपको संयम तथा विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

आप अपने जीवन में यदाकदा प्रमेह या उन्माद रोगों से ग्रस्त रह सकते हैं। देखने में आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर होगा तथा यदा कदा आपकी वाणी भी कटुता से युक्त रहेगी जिससे सुनने वाले अप्रसन्न होंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त

रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय ठीक न चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा समस्त अशुभ प्रभावों का नाश होगा।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।